भूख से मुक्ति का सपना दिखाने वालों का जनविरोधी कारनामा

- सरकार ने विदेशों में भेजने के लिए गेहूं व्यापारियों को बेचा रूपये 4.60/– प्रति किलो और चावल रूपये 6.61 प्रति किलो।

- व्यापारियों ने विदेशों में बेचा गेहूं रूपये 7.50/– प्रति किलो, चावल रूपये 10.25/– प्रति किलो – व्यापारियों का कुल फायदा रूपये 5100 करोड़।

- और देश की जनता को मिला रूपये 5 से 10 प्रति किलो।

भूख तो मिटी, पर किसकी .... ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

जनता विरोधी
सात काम

भूखे पेट भरे गोदाम,

अनाज का निर्यात सस्ते दाम,
फिरंगी गायों व सूअरों के नाम।
मशीनों से कराया काम,
मजदूरों को राम नाम।

बेचें कल कारखाने सस्ते दाम,
देश की सम्पत्ति सेठों के नाम।

दलित दमन सरे आम,
धर्म के नाम कत्ले–आम।

खुदा को छोड़, पैसे को सलाम,
घोटालों से देश बदनाम।

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

5 साल के राज में ....

.....अमीर के लिए सब कुछ सस्ता,
ग़रीब का हुआ हाल खस्ता।

इनको मिला सस्ता

- *मोबाइल*
- *कार*
- *कर्जा (50 पैसा सैकड़ा)*
- *विदेशी यात्रा*
- *हवाई सफर*
- *कम्प्यूटर*

आपको क्या मिला ... ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

आप नहीं समझे, किसका विकास हुआ

वो भूख से मरा था
फुटपाथ पर पड़ा था
उसको उठाकर देखा
नीचे अख़बार पड़ा था
उस पर लिखा था...

फील गुड . . . भारत उदय

केवल दिल्ली शहर में हर साल फुटपाथ पर 3000 लोग मरे पाये जाते हैं।

राजधानी का यह हाल ...
तो बाकी शहर .... ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

जो बोला
सो किया . . .

– केरोसीन का दाम न बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध

क्या बोला ...

केरोसीन का दाम पिछले चार साल में तीन गुणा बढ़ा

खाना पकायें कैसे ... ?
दिया जलाएँ कैसे ... ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

किसके नाम पर किसका फील गुड . . .

– काम किसका...?
नाम किसका...?

भारत सरकार का फील गुड ...

अनेकानेक गरीब, दलित और बच्चों की मेहनत के कारण है, जो आधी मजदूरी पा, आधा पेट भर, आधे आसमान के नीचे सोते हैं ...

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

बेकार युवा लाइन में खड़ा
पीठ पर उसके डंडा पड़ा

काम के लिए दंगे

नेता फिर भी चंगे

गरीब के बच्चे

भूखे और नंगे ...

... *आज भी 4 करोड़ शिक्षित बेरोजगार*

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

कमजोर बचपन, मजबूत राष्ट्र
ये कैसे संभव, बताओ धृतराष्ट्र

- जहां जन्म के साल भर के अंदर

  50 लाख बच्चे मर जाते हैं।

- जहां 17 करोड़ बच्चे कुपोषित हैं।

- जहां बच्चों की आधी आबादी
  स्कूल छोड़ चुकी है।

- जहां एक करोड़ बच्चे मजदूरी करने को मजबूर है।

- जहां 10 लाख बच्चियों को गर्भ में ही मार दिया जाता है।

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

अकाल के समय जब बच्चे–बूढ़े
दलित ग़रीब भूखे सोते थे, तब . . .

- 20 करोड़ बोरी अनाज फिरंगी गायों और सूअरों के लिए विदेशों में बेचा गया।
- 10 करोड़ बोरी अनाज समुद्र में फेंकने की योजना बनाई गई।
- अनाज चूहे खाते थे।
- अनाज सड़ता रहा।

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

- आपको मजदूरी मिलती है ? – नहीं..
- आपको राशन मिलता है ? – नहीं..
- आपके गांव में हैण्डपम्प हैं ? – नहीं..
- आपके घर में बिजली है ? – नहीं...
- आपके पास जमीन है ? – नहीं...
- आपके गांव में स्कूल खुलता है ? – नहीं...
- क्या आपको फील गुड का अहसास है?

– 'हां, फील गुड.... फील गुड....'

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

❖ भूखा तू भी है, भूखा मैं भी हूँ
तुझे पेट की भूख है, मुझे वोट की भूख है
जाओ जाकर दंगा करो, मस्जिद फूंको, बस्तियाँ जलाओ
खून करो, कत्ल करो, कुछ भी करो वोट से पेटी भरो।

❖ तुम उस जात के हो, गरीब की उस पांत के हो
सिर्फ हड्डी बिन मांस के हो, रोटी की जुगाड़ में परेशान हो
सरकार दिखा रही भारत उदय का विज्ञापन, ताकि फील गुड
का अहसास हो।

❖ तुझे काम का अधिकार चाहिए
उन्हें वोट से सरकार चाहिए
भूख से मरो, प्यास से मरो
चाहे जितने दंगे करो, पर वोट से पेटी भरो।

❖ पांच वर्ष के लिए हमें और लाओ,
अयोध्या मे मंदिर बनवाओ,
भूख से भी यदि मरोगे
तो अन्त में राम राम सत्य ही करोगे।

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

❖ क्यो गरीबों के अधिकार को अनदेखा किया जाता है
योजनायें उसके नाम पर, लाभ कहीं और दिया जाता है

❖ गरीबों को झूठे वादे देकर, मांगते हैं वोट,
अपने मन में हमेशा छुपाये रहते हैं खोट,

❖ सब कुछ गरीबों के नाम से पास किया जाता है
आश्वासनों के सिवा उन्हें कुछ नहीं दिया जाता है।

— भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

हो रही मौतें भूख से, गोदामों में अनाज सड़ रहा है,
फिर भी गर्व से कह रहे, देश आगे बढ़ रहा है।

मोबाइल, टी.वी., कारें सस्ती हैं पर गरीब रो रहा है,
गर्भ में पल राह वो बच्चा, अपनी किस्मत से लड़ रहा है,
कुपोषित हैं मां उसकी, जीना दुर्लभ ही रहा है।
फिर भी गर्व से कह रहे, देश आगे बढ़ रहा है।

लोगों को काम नहीं है वे रोजगार बढ़ा रहे हैं,
वो स्कूलों की बातें करते, बच्चे फुटपाथ पर पढ़ रहे हैं
कहीं कर्ज तो कहीं आत्महत्याओं का ग्राफ बढ़ रहा है।
फिर भी गर्व से कह रहे, देश आगे बढ़ रहा है।

गांव का किसान कर्ज में डूबा जा रहा है,
गेहूं चावल, दलिया कोई और खा रहा है,
सच, फील गुड का अहसास किसे हो रहा है।
फिर भी गर्व से कह रहे, देश आगे बढ़ रहा है।

सुना था दाने –दाने पर लिखा
होता है खाने वाले का नाम

राशन की दुकान

अनाज का ढेर

मैं ढूंढ रहा हूं किस दाने पर मेरा नाम लिखा है

विदेश में भेजा लाखों टन अनाज,
यहां गरीब दाने–दाने के लिए मोहताज़।

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

भारत
उदय
की

- ❖ विधवा पेंशन . . . रू. 1500 मात्र
- ❖ इंदिरा आवास . . . रू. 3000 – 5000 मात्र
- ❖ छात्रवृत्ति . . . रू. 100 मात्र
- ❖ राशन कार्ड बनाने . . . रू. 200 मात्र
- ❖ जमीन का पट्टा . . . रू. 3000 – 5000 मात्र

आंगनबाड़ी का दलिया बाजार में बिक जाता है,
आखिर इन योजनाओं का लाभ किसे मिल रहा है।

गरीबों को,

या

नेताओं, कर्मचारियों और दलालों को . . . . ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

स्वच्छ शासन के अपवाद

सिर्फ एक बंगारू, सिर्फ एक जूदेव

सिर्फ एक यू.टी.आई. घोटाला

सिर्फ एक ताबूत घोटाला

सिर्फ एक तहलका घोटाला

सिर्फ एक पेट्रोल–पंप घोटाला

सिर्फ एक तेलगी घोटाला

पांच साल में इतना घोटाला

पचास साल में कितना होगा. . . ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

यह मंजर देखकर मैं डर गया,

एक मजदूर अपने हाथ में रोटी लेकर मर गया,

ख़्वामखाह यह सोचकर परेशान है,

भूख उसकी मर गई या भूख से वह मर गया,

— ख़्वामकहा
हैदराबादी

हे धृतराष्ट्र – बढ़ रहे बेरोज़गार

कर्मशील जनसंख्या की वृद्धि	30 प्रतिशत
रोजगार दर में वृद्धि	2.1 प्रतिशत

बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि

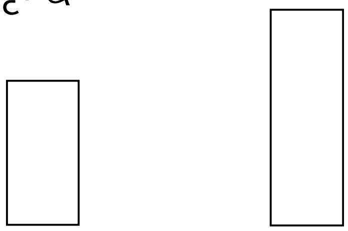

- ❖ सार्वजनिक क्षेत्रों से 11 लाख लोग हटाए गए ?
- ❖ प्रधानमंत्री रोजगार योजना से किन 84 लाख लोगों को रोजगार मिला ?
- ❖ क्या आपको मिला . . . . ?

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

यह है बेरहम सरकार
बुजुर्गों को समझें बेकार

वृद्धों के सामने फेकें टुकड़े
बाकी सब पे भूख की मार

सांसद/ विधायक को पेंशन	रूपये	....?.....	प्रतिमाह
बुजुर्गों को पेंशन	रूपये	75	प्रतिमाह

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

जनता की गाढ़ी कमाई
नेताओं आधिकारों ने खूब खाई

- ❖ ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार
- ❖ ब्लॉक में भ्रष्टाचार
- ❖ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में भ्रष्टाचार
- ❖ थाने में भ्रष्टाचार
- ❖ कचहरी में भ्रष्टाचार

पूरी व्यवस्था भ्रष्टाचार के चंगुल में
लोकतंत्र हुआ भ्रष्ट तंत्र
लोग हुए लाचार

— भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

प्रधानमंत्री की प्रिय
स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना में
विदेशी कम्पनियों व देशी ठेकेदारों
की चल रही खुली लूट पर
सवाल उठाने वाले इंजीनियर

सत्येन्द्र कुमार दुबे
के हत्यारे कौन

— भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

Not getting Roti *- N0*
Problem!

Feel good ! feel good !

Not getting Rice *- N0*
Problem!

Feel good ! feel good !

School College fees hired *- O.K.*

Feel good ! feel good !

Feeling Hungry ? *- O.K.*

Feel good ! feel good !

No Job, No tension !

Feel good ! feel good !

<u>Because India is Shining</u>

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

किसानों को कर्जा 12 : पर
मारूति 6 : पर

खेत बेचो
मारूति लाओ
कितनी अच्छी आर्थिक नीति
अमीर और अमीर

- *मोबाइल*
- *कार (50 पैसे सैकड़ा)*
- *सड़क*
- *पेप्सी*
- *सस्ती विदेशी यात्रा*
- *लेपटॉप कम्प्यूटर*

सोचें, समझे . . . फैसला करें,
क्या ऐसी सरकार हम चाहेंगे।

5 साल के राज में अमीर के लिए सबकुछ सस्ता
गरीब का हुआ हाल खस्ता

– भारत दुर्दशा
भारत ग्रहण

फासीवाद के दो चेहरे

	हिटलर		संघ परिवार का हिन्दुत्व
1	हिटलर 1930 के दशक में समाजवादियों की मदद से सत्ता में आया।	1	हिन्दुत्व शक्तियां पहले जे.पी. आंदोलन और बाद में अन्य समाजवादियों की मद से सत्ता में पहुंची।
2	जर्मनी की संसद पर बम विस्फोट से हमला, समाजवादियों को दोषी ठहरा कर सत्ता पर कब्जा।	2	भारतीय संसद पर हमला, आंतकवादियों का ड़र दिखा कर लोकतंत्र विरोधी 'पोटा' कानून पारित करवाया।
3	जर्मन स्वाभिमान की बात उठाई।	2	भारतीय स्वाभिमान की बात उठाई।
4	जर्मनी को महाशक्ति बनाने के लिए सेना को मजबूत दिया।	4	भारत को महाशक्ति बनाने के लिये परमाणु बम का विस्फोट किया।
5	जर्मनी राष्ट्रवाद का महिमा मण्डन।	2	भारतीय राष्ट्रवाद का महिमा मण्डन।
6	यहूदियों की बड़े पैमाने पर हत्या करवाई।	2	अल्पसंख्यकों के खिलाफ अभियान, गुजरात में मुसलमानों का नर संहार।